जलागम समाचार

वर्ष 2 अंक 3 अगस्त, 2007

सम्पादकीय

पिछले ४० वर्षो से उत्तराखण्ड हिमालय के पारिस्थितिक तन्त्र में आये बदलावों को नजरअंदाज नही किया जा सकता है। इन बदलावों ने गांव, राज्य एवं देश के प्रत्येक कोने को विपरीत रूप से प्रभावित किया है। राज्य के पर्वतीय गावों से बड़ी संख्या में हुआ पलायन इसका उदाहरण है। गांव के पारिस्थितिक तंत्र के मूल घटकों में हुये विघटन एवं असंतुलन ने जीवन को नई चुनौति प्रदान की है जिसके फलस्वरूप घटती उत्पादकता, आर्थिक विपन्नता एवं विपरीत जलवायु के रूप में दूरगामी कुप्रभाव देखने को मिल रहे हैं। यदि सब कुछ ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले समय में संसाधनों के घोर असंतुलन से जुझना पड सकता है।

प्रकृति के पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने सम्भावनाओं को बनाये रखा है। आज भी उत्तराखण्ड में होने वाली कुल वर्षा का मात्र ३ प्रतिशत जल ही हमारी पेयजल, सिंचाई एवं अन्य जल आधारित वाणिज्यिक कार्यो को करने के लिये पर्याप्त है। लेकिन सफल प्रबन्धन की प्रवृति न होने से गांवों में पेयजल संकट बढ़ रहा है और खेत सूख रहे हैं।

इन्ही चिन्ताओं के मध्य हिमोत्थान परियोजना के तहत दुगड्डा जलागम क्षेत्र के पांच गावों में चलायी जा रही प्राकृतिक संसाधन प्रबन्ध परियोजना ने विभिन्न ग्रामीण परिस्थितिक घटकों के मध्य पुन: संतुलन स्थापित करने में छोटी किन्तु महत्वपूर्ण सफलतायें हासिल की है। स्थानीय जन, पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास के पहलुओं को समझ कर अपने सतत विकास की सीढी चढने लगे हैं। बौद्धिक विकास एवं कुशलता वृद्धि के साथ ही आज सम्पूर्ण जलागम क्षेत्र में जल, जंगल, जमीन के प्रबन्धन में समुदाय आगे बढ़कर महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहे हैं।

इन प्रयासों को आगे बढाने में प्रत्येक चिन्तनशील जन का सहयोग अपेक्षित है।

संपादक.....

सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के आर्थिक सहयोग से संचालित दुगड्डा जलागम प्रबन्ध परियोजना के अन्तर्गत तीसरी छमाही में निम्न गतिविधियां संचालित की गई।

शैक्षिक भ्रमण : जलागम विकास समिति, ग्राम विकास समिति, ग्राम कोष, महिला मंगल दल एवं स्वयं सहायता समूहों के 33 सदस्यों के लिए सेम गधेरा जलागम क्षेत्र, 'माउन्ट वैली डेवलपमेन्ट एसोसिएशन', घनसाली, जिला टिहरी में तीन दिवसीय शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया।

संगठनात्मक गतिविधियाँ : जलागम क्षेत्र में 93 बैठकें आयोजित की गई, ग्राम स्तरीय बैठकों में 100 प्रतिशत उपस्थिति ने सामुदायिक विकास में पारदर्शिता, कार्यों की गुणवत्ता, सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया को मजबूत किया है।

स्वयं सहायता समूह : स्वयं सहायता समूह, ग्राम स्तरीय बैंकों की भूमिका में बहुत प्रभावी सिद्ध हुए हैं। समुदाय की आकस्मिक आर्थिक आवश्यकताओं की तत्काल पूर्ति करने में स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

क्र. स.	गाँव का नाम	समूह का नाम	कुल सदस्य	कुल बचत	कुल आय	ऋण	ब्याज
1	मसोन	राम	11	3520	7254	18000	1020
2	मसोन	विष्णु	12	3820	1304	10000	600
3	सणव मल्ला	भदराज	10	3700	960	3500	150
4	सणव तल्ला	गंगा	16	4830	600	4000	780
5	सणव तल्ला	यमुना	10	3100	600	6000	380
6	मोगी	यमुना	19	6080	2530	31500	1575
7	मोगी	पार्वती	19	3230	250	3000	100
8	मसोन	किसान	16	3200	–	–	–
		कुल	**113**	**31480**	**13498**	**76000**	**4605**

महिला दिवस : 8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन विकासखण्ड जौनपुर मुख्यालय थत्यूड में किया गया, जिसमें जलागम क्षेत्र के अतिरिक्त विकासखण्ड की चार पट्टियों की 413 महिलाओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का उद्घाटन

परियोजना निदेशक हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना सुश्री ज्योत्सना सितलिंग ने किया। सम्मेलन में प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन, महिलाओं पर हिंसा रोकने, भ्रुण हत्या बन्द करने, स्वयं सहायता समूहों की कार्य प्रणाली के अतिरिक्त सामुदायिक विकास में महिलाओं की भागीदारी जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई और निर्णय लिये गये।

प्रशिक्षण : जलागम क्षेत्र में समुदाय की क्षमता व कौशल वृद्धि के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूह, लेखा, पौधशाला विकास, सब्जी उत्पादन, दुग्ध उत्पादन वृद्धि, एस.आर.आई. के साथ ही प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन दल के सदस्यों के लिए क्षमता वृद्धि आदि प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में 153 सामुदायिक व संस्थागत कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया।

वृक्षारोपण : 23.06 हेक्टेयर सामुदायिक क्षेत्र में विभिन्न प्रजातियों जैसे गुरियाल, बाँज, देवदार, आँवला, बांस, सिरस, रिंगाल आदि के 38640 मिश्रित चारा, ईंधन व इमारती लकड़ी के पौधों का रोपण किया गया।

मसोन	सणव तल्ला	सणव मल्ला	मौगी	योग
9930	14610	9890	4210	38640

क्र स.	प्राशिक्षण का नाम	प्रतिभागी पुरुष	महिला
1	नर्सरी प्रशिक्षण	10	13
2	वर्मी कम्पोस्ट	10	02
3	श्रीधान विधि	25	16
4	चारा विकास	10	02
5	लेखा प्रशिक्षण	11	07
6	चाराघास नर्सरी	04	03
7	सब्जी उत्पादन	20	02
8	श्रीविधि राजमा	02	01
9	ओरियन्टेशन	09	42
10	क्षमता विकास	06	06
11	जैविक कृषि	05	–
12	पशु प्रबन्धन	13	17
	कुल	125	111

ग्रामकोष : सभी कार्यक्रमों में समुदाय के श्रमदान व अंशदान से ग्राम कोष में रु 1,44,494/– की धनराशि जुटायी गयी है, जिसका वर्तमान में आन्तरिक ऋण के रूप में उपयोग किया जा रहा है और भविष्य में यह पूंजी परियोजना के अन्तर्गत निर्मित कार्यों के रखरखाव में खर्च की जायेगी।

गाँव	धनराशि	ऋण	ब्याज	बैंक
मसोन	37150	2000	950	35150
मोगी	18766	–	–	18766
सणब तल्ला	20095	–	–	20095
सणब मल्ला	28483	6100		22383
कुल	104494	8100	950	96394

'हमारी पूंजी हमारी ताकत'

चारा विकास : ग्राम मौगी व मसौन में 6 हेक्टेयर चाराघास नैपियर, औंस, राईघास, ब्रोम, दोलनी व गुच्छी घास का रोपण किया गया। घास की पौधशालायें, व्यक्तिगत व स्वयं सहायता समूह के माध्यम से विकसित की गयी। चारा घास, चारा पत्ती की 48000 पौध का उत्पादन कर रोपण किया गया।

सिंचाई टैंक निर्माण : जलागम क्षेत्र में 115200 लीटर क्षमता के 4 सिंचाई टैंकों का निर्माण किया गया, जिससे 4.3 हैक्टेयर असिंचित कृषि क्षेत्र को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हुई।

मछली पालन : दो मछली तालाबों का निर्माण (श्री त्रेपन सिंह, ग्राम मगधिया व श्री सुन्दर सिंह, ग्राम मौगी) किया गया। एक टैंक में कॉमन कॉर्प व दूसरे टैंक में स्थानीय प्रजाति की मछली डाली गयी। इस क्षेत्र में यह पहला प्रयोग है और यदि यह प्रयोग सफल रहा तो मछली पालन हमारी अर्थव्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकता है।

परियोजना का सहभागी मूल्यांकन : अगस्त 2007 में परियोजना के मूल्यांकन हेतु 3 दिवसीय सहभागी मूल्यांकन कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 48 प्रतिभागियों, वन विभाग, पशुपालन विभाग, प्राथमिक विद्यालय मौगी के शिक्षक, जलागम विकास समिति के सदस्य, पंचायत प्रधान, ग्राम विकास समिति, स्वयं सहायता समूह व महिला मंगल दल के सदस्यों के अतिरिक्त संस्था द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत परियोजना समन्वयकों ने प्रतिभाग किया।

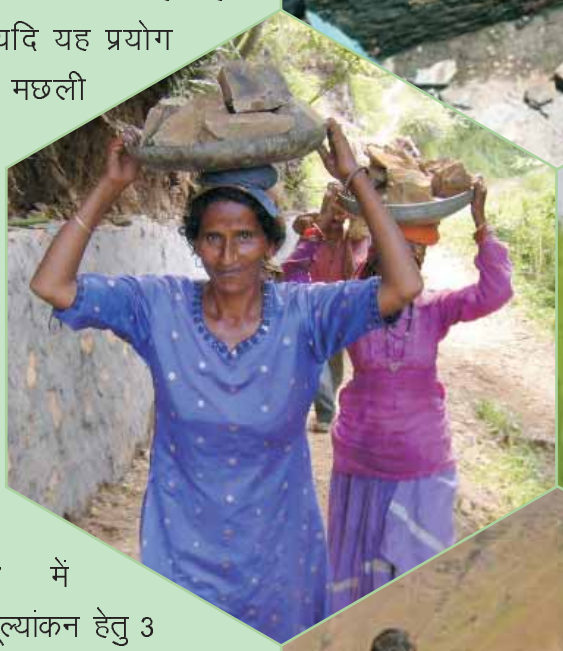

श्रीधान विधि से धान उत्पादन में दोगुनी वृद्धि : श्रीधान विधि से धान की खेती के परिणाम उत्साहवर्धक एवं चौंकाने वाले रहे हैं। ग्राम मसोन में श्री चैन सिंह के खेत में इस विधि का पहला प्रदर्शन किया गया। उस खेत में पराम्परागत रूप से 80 पाथे (1 पाथा = 2 किलो) धान का उत्पादन होता था, जबकि एस.आर.आई विधि से उसी खेत में 360 किलो धान का उत्पादन होने के साथ–साथ पुवाल में भी दुगने से अधिक की वृद्धि हुई है।

विकासखण्ड जौनपुर में एस. आर.आई. विधि से 32 गाँवों में 42 किसानों के साथ धान के प्रदर्शन लगाये गये। सभी प्रदर्शन प्रक्षेत्रों के परिणाम हालांकि काफी अलग– अलग हैं, किन्तु सभी आंकड़ों के विशलेषण के उपरान्त उत्पादन में 98 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गई। ■

S.R.I. व परम्परागत विधि के तुलनात्मक नतीजे

	परम्परागत	S.R.I.
पौंधे की संख्या	34 - 41	16
जड की लम्बाई	4-8 cm	6-12 cm
कल्लों की सख्या	3-15	13-45
पौंधे की लम्बाई	60-64 cm	90-97 cm
बाली की औसत ल0	17-22 cm	25-30 cm
दानों की सख्या	100	198
दानों का वजन	75 gm	90 gm

सज्जा - नीरज गुप्ता

गढ़वाल विकास केन्द्र
GARHWAL VIKAS KENDRA
पो. सुमन क्यारी, नैनबाग, टिहरी गढ़वाल
फोन : 01376-228420, 0 9411187535
ई–मेल : gvkindia@gmail.com

आर्थिक सहयोग
सर रतन टाटा ट्रस्ट मुम्बई

तकनीकी सहयोग
लोक विज्ञान संस्थान, देहरादून

सम्पादन
मीरा कैन्तुरा

सहयोग
रघुबीर, नागेन्द्र, परेन्द्र सकलानी